Date :

Human value and ethics

→ मूल्य के लिए अंग्रेजी मे value शब्द का प्रयोग किया गया है value की उत्पत्ति valere शब्द से हुई है जिसका तात्पर्य Worth है एवं इसका सार, महत्व है यह सार या महत्व किसी कर्म के परिणाम, प्रभाव या गुण के सन्दर्भ मे मापित किया जाता है यही उसकी value का मूल्य होता है

Defination of value :- → मूल्य शब्द का अध्ययन प्राचीनकाल मे धर्मशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है एवं वर्तमान मे Axiology या मूल्यशास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है विभिन्न विद्वानों, विचारकों एवं दार्शनिकों ने मूल्य को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया था

→ जब किसी कृत्य, कर्म, विचार या प्रक्रिया की गुणवत्ता, प्रभाव एवं परिणाम पर तर्कसंगत तथा बौद्धिक ढंग से विचार किया जाता है और यह विचार न केवल व्यक्ति के लिए स्वयं वरन् अन्य के लिए भी उसी अनुपात मे समान रूप से लागू होता है साथ ही वह अपने पूर्णक्रिया से गहन सन्तोष की अनुभूति भी करेगा तब वह मूल्य कहलाता है

मूल्य की विशेषता :- → मूल्य वैयक्तिक से सार्वभौमिक रूप के हो सकते है

→ मूल्य के सम्बन्ध मे व्यक्ति मे आरम्भिक विधानात्मक विश्वास होता है

→ मूल्य उर्जा, पयोष्ठता, श्रेयसता को अभिव्यक्त करते है

→ मूल्य आदेश होते है प्राप्ति के समय मे व्यक्ति से बाहर आते है

Type of value :- there are four type.

धर्म → इसकी उत्पत्ति धृ धातु से हुई है जिसका सरल अर्थ धारण करना है

अर्थ →

काम →

मोक्ष →

Date :

(नीति)

Ethics :- → नीति की उत्पत्ति नी धातु से क्तिन् प्रत्यय के योग से मानी जाती है

Definition :- → आचरण से ओत-प्रोत आदर्श या अच्छाई बुराई औचित्य-अनौचित्य के मानक सिद्धांत ही नीति है

Importance of Ethics :- → लालबहादुर शास्त्री, अटल जी जैसे नेता थे जो नीतियों को महत्व देते थे आज अन्तरात्मा की आवाज न सुनकर केवल भौतिक सुविधाओं की ओर ध्यान दिया जा रहा है
इस खाद्य पदार्थ जैसे बेसन, दाल, मिर्च, घी, खोया, तेल मे मिलावट ही आ रही है, व्यापारी वर्ग अत्यधिक मुनाफे के प्रलोभन मे नीति को तिलांजलि दे रहा है
आज नीतियों के अभाव मे परिवार टूट रहे है अपने स्वयं के बच्चे, पत्नि के अलावा अन्य सदस्यो पर ध्यान नही दिया जा रहा है पहले नीति के कारण संयुक्त परिवार मे सभी परिवार के लोग इकट्ठे रहते थे

नीति की विशेषता :- → नीति व्यक्ति के शील स्वभाव एवं चरित्र का निर्माण करती है
नीति के आदर्श सत्यं, शिवम् तथा सुन्दरम् का मार्ग आलोकित करते है
नीति किसी भी समुदाय, राज्य, तथा राष्ट्र की प्रगति हेतु उचित नियमों का निर्धारण करती है
नीति एवं रीति, युक्ति एवं पद्धति की त्रिवेणी है जिसके मूल मे विश्वास की भावना निहित रहती है

* **Gole (लक्ष्य)** :- → साधारण शब्दों मे कहा जाये तो goal हमारा वह लक्ष्य होता है जिसे हम पाना चाहते है और उसके लिए लगातार प्रयास करते है

there are goal three type-

1. Short term goal :- यह कुछ दिनों से लेकर कुछ हफ्तों तक होता है
2. mid term goal :- यह कुछ हफ्तों से लेकर कुछ महिनों तक होता है
3. Long term goal :- यह कुछ महिनों से लेकर कुछ सालों तक होता है

Importance of goal :- → सच कहूँ तो दोस्तों हम मे से ज्यादातर लोग ना तो अपने जीवन का कोई लक्ष्य निर्धारित करते है और ना ही इसकी ~~महत्व~~ महत्वा को समझते है जबकि बिना लक्ष्य जीवन किसी काम का नही है क्योंकि लक्ष्य वह कार्य होता है जिसके पूरे होने की इच्छा हम दिल मे दबाये रहते है बस कोशिश नही करते क्योंकि हमें असंभव सा या कठिन सा प्रतीत होता है जबकि जीवन का लक्ष्य अगर सामने हो तो मेहनत करना अच्छा भी लगता है आसान भी लगता है और हम इसमे काफी हद तक सफल भी हो जाते है लक्ष्य निर्धारित के पश्चात् हमे मेहनत करने के लिए एक सही दिशा ज्ञात होती है

लक्ष्य की ओर पहला कदम :- → सबसे पहले हम यह सोच ले कि हमे कौनसी चीज पसन्द है जो हमारे चेहरे पर मुस्कान ला सकती है और अपना एक बड़ा सा लक्ष्य तय कर ले और उसको पाने के लिए मेहनत करे बस ये न सोचे की यह लक्ष्य कैसे व कब पूरा होगा।

लक्ष्य की ओर दूसरा कदम :-

इसमें लक्ष्य निर्धारित के बाद आपको सबसे पहले स्वयं के लिए वक्त सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि इस लक्ष्य की प्राप्ती हेतु आपको कितना समय चाहिए अगर लक्ष्य ऐसा होगा जिसका सपना हमेशा से देखा होगा तो आप उसको ~~पहले~~ पूरा करने के लिए स्वयं कड़ा प्रयास करेंगे

लक्ष्य की ओर तीसरा कदम व सबसे महत्वपूर्ण कदम :-

अब आपको लक्ष्य पूरा करने हेतु जो कार्य करने है उनकी योजना बनानी है आप बस यही सोचिए कि लक्ष्य प्राप्ती के बाद आप कहाँ खड़े है आप कितने खुश है तब आपको लगेगा आसान है तब दिमाग लगाएं की आपको इसको पाने के लिए कौन-कौन से काम करने है

अगर जीवन मे एक निर्धारित लक्ष्य नही होगा तो हम किसी भी मंजिल को हासिल करने मे हमेशा असफल रहेंगे क्योंकि जब हमको यही पता नही है कि हमे किस मंजिल पर जाना है तो रास्ते कितने भी हो मंजिल पर नही पहुंचते है
लक्ष्य ही सफलता की सीढ़ी है

Date :

(जीवन का उद्देश्य) :-

* Mission of Life

→ मनुष्य का महत्वाकांक्षी होना एक ~~स्वाभि~~ स्वाभाविक गुण है प्रत्येक व्यक्ति जीवन में कुछ न कुछ विशेष प्राप्त करना चाहता है कुछ बड़े होकर डॉक्टर या इंजीनियर बनाना चाहते है तो कुछ व्यापारी में अपना नाम कमाना चाहता है

→ दृढ़ इच्छा शक्ति का होना जीवन में अतिआवश्यक है
→ जीवन में निश्चित लक्ष्य का होना अति आवश्यक है
→ जीवन में लक्ष्य सदैव बड़ा होना चाहिए

* जीवन में लक्ष्य का होना जरूरी क्यों है :-

→ यदि आपसे पूछा जाये कि क्या आपने अपने लिए कुछ लक्ष निर्धारित कर रखे है तो आपके सिर्फ दो ही जवाब हो सकते है हां या ना। अगर हां जवाब है तो ये बहुत ही अच्छी बात है क्योंकि ज्यादातर लोग बिना किसी निर्धारित लक्ष के ही अपनी जिन्दगी बिताये जा रहे है और आप उनसे कहीं बेहतर स्थिति में है, पर यदि जवाब ना है तो ये थोड़ी चिन्ता का विषय है थोड़ी इसलिए क्योंकि भले ही अभी आपका कोई लक्ष ना हो पर जल्द ही सोच विचार कर के अपने लिए एक लक्ष्य निर्धारित कर सकते है

vision of life (जीवन दृष्टि) :-

→ लोग एक सामान्य सा सवाल उठाते रहते है जीवन क्या है जीवन की कोई एक परिभाषा नहीं है न तो जीवन का कोई सम्यक सिद्धांत है जो एक समान सब पर लागू किया जा सके। यह एक दृष्टि है, एक विचार है एक संभावना है जिसका निर्णय हम और हमारी मनोवृतियां मूलप्रवृतियां, समय, परिस्थिति, भौगोलिक तथा जलवायु आदि तत्व निर्धारित करते है हर आदमी का जीवन के प्रति उन्ही परिस्थितियों मे एक दृष्टिकोण धीरे-2 और कभी आकस्मिक रूप मे निर्धारित हो जाता है जीवन की विविधता का कोई अन्त नही है, यह वैविध्य अनंत है यह हमें भीतर चुपचाप विकसित होता रहता है और किसी भी समय फूल की तरह खिल जाता है फिर तो उसी प्रकार का जीवन हमको घेर लेता है हम उसी पर चलते रहते है, कभी कोई घटना घटी तो बदल भी जाता है अतः यह विवाद का विषय हो सकता है कि कौन और किस प्रकार का जीवन अच्छा अथवा बुरा है किसी एकदृष्टि मे, पर कैसा जीवन जीना चाहिए उसके लिए कोई आधिकारिक रूप से सिद्धान्तों का सामान्यीकरण नही किया जा सकता। ~~कुछ उदाहरण~~

नई जीवन दृष्टि को विकसित करें :-

→ हर इन्सान की चाहत होती है सफल और सार्थक जीवन, आनन्द और खुशी भरा जीवन प्रकृति मे आनन्द सर्वत्र बिखरा पड़ा है पर उसे समेटने वाला जो मन होना चाहिए वह मन हमारे पास नही है भगवान ने हमारे आनन्द के लिए ~~है~~ हमारे जीवन को खुसहाल बनाने के लिए ही प्रकृति की रचना की है प्रकृति दोनो हाथ फैलाकर हमे खुशियाँ ही खुशियां देनी चाहती है लेकिन हम है कि उन खुशियों को बटोर ही नही पाते है झोली मे भाई खुशियां और ~~आनन्द~~ आनन्द हमारी कुछ कमजोरियों के कारण ~~मानसिक~~ मानसिक दुर्बलताओ के कारण लौट जाती है और हम हर समय चिंता करते हुए तनाव मे ही जीना हमारी नियति बना रहता है

* ~~Princpal~~ Principal of vision of life :-

→ समय के आरम्भ से हम स्वयं को विभिन्न तरीकों से वर्गीकृत और श्रेणीबद्ध करने का प्रयास करते रहे हैं ~~अभी~~ प्राचीन सभ्यताओं के चार स्वभावों आशावादी (सैंग्विन), तुनुकमिजाज (कॉलरिक) विषादपूर्ण (मेलनकोलिक) और आवेगहीन (फ्लेगमैटिक) से लेकर मनोविज्ञान की नवीनतम उन्नतियों तक, लोग मनुष्य के व्यक्तित्व जैसी जटिल और परिवर्तनशील चीज को एक पूर्णरूप से परिभाषित मॉडल में फिट करने के लिए एक अच्छे, विश्वसनीय तरीके की तलाश में विचलित रहे हैं हम अभी भी एक ऐसे मॉडल से ~~कुछ~~ थोड़ी दूर हैं हालांकि वर्तमान मॉडल हमारे व्यक्तित्व के अधिकांश गुणों को सम्मिलित करते हैं और अक्सर उच्च विश्वसनीयता के साथ यह अनुमान लगा सकते हैं कि हम विशिष्ट स्थितियों में किस प्रकार का बरताव कर सकते हैं

→ हमारे दृष्टिकोण की जड़ें से अलग दर्शनशास्त्रों में है एक बीसवीं सदी के आरम्भ में विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के संस्थापक कार्ल गुस्ताफ युंग के दिमाग की उपज है व्यक्तित्व के प्रकारों के क्षेत्र में युंग के मनोवैज्ञानिक प्रकारों के सिद्धांत शायद सर्वाधिक प्रभावशाली रहे हैं और इसने हमारे सिद्धांतों सहित अनेक सिद्धांतों को प्रेरित किया है युंग के मुख्य योगदानों में अंतर्मुखता (इंट्रोवर्जन) और बहिर्मुखता (एक्स्ट्रावर्जन) के सिद्धांतों का विकास शामिल है उन्होंने यह सिद्धांत बनाया कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति इन दोनों में से एक श्रेणी में आता है या तो वह भीतरी दुनिया (इंट्रोवर्ट) पर केन्द्रित होता है या बाहरी दुनिया (एक्स्ट्रावर्ट) पर। आज के दौर में इन शब्दों को आमतौर पर अलग तरह से परिभाषित किया जाता है जिसके अनुसार बहिर्मुखता को सामाजिक कौशल के समानार्थक माना जाता है परन्तु युंग की मूल परिभाषा इस पर बात पर केन्द्रित थी कि व्यक्ति अपनी ऊर्जा कहाँ से प्राप्त करता है इस अर्थ के अनुसार अंतर्मुखता का अर्थ शर्मीलापन नहीं होता और बहिर्मुखता का अर्थ अच्छा सामाजिक कौशल नहीं होता है

→ कैथरीन कुक ब्रिग्स की सन 1920 के दशक में युंग के सिद्धांतों पर नजर पड़ी और उन्होंने कुछ वर्षों बाद आज के दौर में उपयोग की जाने वाली सर्वाधिक रूप से लोकप्रिय व्यक्तित्व के संकेतों की सहरचना की जिसका नाम था "मायर्स-ब्रिग्स टाइप इंडिकेटर ब्रिग्स एक शिक्षिका," थी जिन्हें व्यक्तित्व के प्रकारों में विशेष रुचि थी और युंग के लेखों को पढ़ने से पहले वह स्वयं ही व्यक्तित्व के प्रकारों के सिद्धांत बना चुकी थी अपनी बेटी इजाबेल ब्रिग्स मायर्स, के साथ उन्होंने प्रत्येक व्यक्तित्व की युंगियन प्राथमिकताओं के क्रम का वर्णन करने के लिए एक सुविधाजनक तरीके का विकास किया इसी तरह चार अक्षरों की परिवर्णियों का जन्म हुआ था

→ यदि आपको अधिक जानने की इच्छा है, तो आपको इजाबेल ब्रिग्स मायर्स द्वारा लिखित गई गिफ्ट्स डिफरिंग: अंडरस्टैंडिंग पर्सनैलिटी टाइप पढ़नी चाहिए।

→ व्यक्तित्व के पाँच पहलू होते हैं

1. मस्तिष्क :- यह पहलू दिखाता है

2. ऊर्जा :- यह निर्णय दर्शाता है कि हम दुनिया को कैसे देखते हैं

3. प्रकृति :- यह पहलू इस बात को दर्शाता है कि हम अपनी भावनाओं को कैसे संभालते हैं

4. कार्यनीति :- यह पहलू यह बताता है कि कार्य, योजना और निर्णय लेने में हम कौनसा दृष्टिकोण अपनाते हैं

5. पहचान :- अन्त में पहचान का पहलू बाकी सभी पहलूओं का आधार है

*. Philosophy of vision of life :— → दर्शन उस विद्या का नाम है जो सत्य एवं ज्ञान की खोज करता है व्यापक अर्थ में दर्शन, तर्कपूर्ण, विधिपूर्वक एवं क्रमबद्ध विचार की कला है इसका जन्म अनुभव एवं परिस्थिति के अनुसार होता है कि संसार के भिन्न-2 व्यक्तिओं में समय-2 पर अपने-2 अनुभवों एवं परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न प्रकार के जीवनदर्शन को अपनाया है

→ भारतीय दर्शन का इतिहास अत्यन्त पुराना है किन्तु फिलॉसफी के अर्थों में दर्शनशास्त्र पद का प्रयोग सर्वप्रथम पाइथागोरस ने किया था विशिष्ट अनुशासन और विज्ञान के रूप में दर्शन को प्लेटो ने विकसित किया था

→ प्राय: फिलॉसफी को दर्शन का अंग्रेजी समानार्थक समझा जाता है परन्तु दोनों में स्पष्ट अन्तर है भारतीय दर्शन और फिलॉसफी एक नहीं है क्योंकि दर्शन यथार्थता, जो सत् है, का तत्वज्ञान है जबकि फिलॉसफी विभिन्न विषयों का विश्लेषण है

→ अर्थात् असत् एवं सत् पदार्थों का ज्ञान ही दर्शन है पाश्चात्य फिलॉसफी शब्द फिलॉस + सोफिया (प्रेम + प्रज्ञा) से मिलकर पाश्चात्य बना है इसलिए फिलॉसफी का शाब्दिक अर्थ है बुद्धि प्रेम।

→ भारतीय दर्शन का आरंभ वेदों से होता है वेद भारतीय धर्म दर्शन संस्कृति, साहित्य आदि सभी के मूल स्रोत है आज भी धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अवसर पर वेद-मंत्रों का गायन होता है

→ हिन्दू धर्म में दर्शन अत्यन्त प्राचीन परम्परा रही है वैदिक दर्शनों में षड्दर्शन अधिक प्रसिद्ध है और प्राचीन है गीता का कर्मवाद भी इनके समकालीन है षड्दर्शनों को आस्तिक दर्शन कहा जाता है

(1) न्यायदर्शन (2) योगदर्शन (3) वैशेषिक दर्शन
(4) सांख्य दर्शन (5) मीमांसादर्शन (6) वेदांत दर्शन (7) चार्वाकदर्शन

exploration
* **स्व-अन्वेषण का शोध :-**

→ अन्वेषण या शोध शब्द अंग्रेजी के एक्सप्लोरेशन या रिसर्च का हिन्दी अनुवाद है यह दो शब्द re और search से मिलकर बना है re का अर्थ होता है पुनः और search का अर्थ होता है खोज है इस तरह इन दोनों शब्दों का अर्थ होगा पुनः खोज।

Definition :- → रैडमैन और मोरी ने अपनी किताब the Romance of Research में अन्वेषण या शोध का अर्थ स्पष्ट करते हुये लिखा है कि नवीन ज्ञान की प्राप्ति के व्यवस्थित प्रयत्न को हम अन्वेषण या शोध कहते हैं

type :- इसके तीन प्रकार होते हैं

(1) **मौलिक या विशुद्ध अन्वेषण या शोध :-**
→ अन्वेषण या शोध के इस प्रकार में सामाजिक जीवन या घटना के सम्बन्ध में मौलिक सिद्धान्तों और नियमों का अनुसंधान किया जाता है इसका उद्देश्य नए ज्ञान की प्राप्ती और बढ़ोतरी के साथ पुराने ज्ञान की पुन: परीक्षा द्वारा उसका शुद्धीकरण होता है

(2) **व्यावहारिक शोध :-**
→ P.V यंग के अनुसार खोज कारक निश्चित सम्बन्ध लोगों की प्राथमिक आवश्यकताओं और कल्याण से होता है सिद्धांत और व्यवहार आगे चलकर बहुधा एक दूसरे में मिल जाते हैं इसी मान्यता के आधार पर सामाजिक अन्वेषण या शोध के दूसरे प्रकार को व्यावहारिक शोध कहा जाता है

(3) **क्रियात्मक शोध :-**

→ जब सामाजिक शोध अध्ययन के निष्कर्षों को क्रियात्मक रूप देने की किसी भावी योजना से सम्बन्ध होता है तो उसे क्रियात्मक शोध कहा जाता है

→ अध्ययन के समय घटना या समस्या के वास्तविक क्रिया पक्ष पर ध्यान

→ समस्या और घटना के सम्बन्ध में ज्ञान

→ सहयोग की प्राप्ती

→ रिपोर्ट को आरम्भ में ही अंतिम रूप न देना

अन्वेषण या शोध अभिकल्प का महत्व एवं विशेषताएँ :-

→ इसका सम्बन्ध सामाजिक शोधो से होता है अर्थात् सामाजिक शोधो के दौरान शोध कार्य करने के लिए सामाजिक शोधों का निर्माण किया जाता है

→ इसके द्वारा सामाजिक घटना का सरलीकरण किया जाता है

→ यह नियंत्रण का कार्य करती है यह शोध प्रक्रिया में आगे की परिस्थितियों को नियंत्रित करती है

→ इस प्रक्रिया में कम खर्च होता है यह मानवीय श्रम को कम करके समय और सरलता को भी कम करती है

→ यह बाधा निवारक का काम करती है

अन्वेषण या शोध की समस्या :-

→

* **स्व चेतना :-**

→ चेतना कुछ जीवधारियों में स्वयं के और अपने आस-पास के वातावरण के तत्वों का बोध होने, उन्हें समझने तथा उनकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है विज्ञान के अनुसार चेतना वह अनुभूति है जो मस्तिष्क में पहुँचने वाले अभिगामी आवेगों से उत्पन्न होती है इन आवेगों का अर्थ तुरन्त अथवा बाद में लगाया जाता है

स्व-चेतना का स्थान :-

→ बहुत पुराने काल से प्रभावित पीतस्था चेतना की मुख्य इंद्रित अथवा प्रमुख स्थान माना गया है इसमें से भी पुर्वललाट के क्षेत्र को विशेष महत्व दिया गया है परन्तु पेनफील्ड और चास्पर्स चेतना को नए तरीके से ही समझाते हैं उनके मतानुसार चेतना का स्थान, चेतक, अधश्चेतक और ऊपरी मस्तिष्क के ऊपरी भाग के आस-पास है

स्वचेतना और चरित्र :-

→ चेतना और मनुष्य के चरित्र में मौलिक सम्बन्ध है चेतना वह विशेष गुण है जो मनुष्य को जीवित बनाती है और चरित्र उसका वह सम्पूर्ण संगठन है जिसके द्वारा उसके जीवित रहने की वास्तविकता व्यक्त होती है तथा जिसके द्वारा जीवन के विभिन्न कार्य चलाये जाते हैं

→ किसी मनुष्य की चेतना और चरित्र केवल उसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होती। ये बहुत दिनों के सामाजिक प्रक्रम के परिणाम होते हैं प्रत्येक व्यक्ति अपने वंशानुक्रम को स्वयं में प्रस्तुत करता है

→ मानव चेतना की तीन विशेषताएं होती हैं ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक है

→ मनोविज्ञान की दृष्टि से चेतना मानव में उपस्थित वह तत्व है जिसके कारण उसे भली प्रकार की अनुभूतियां होती है चेतना के कारण ही हम देखते, सुनते, समझते और अनेक विषय पर चिंतन करते है इसी के कारण हमें सुख - दुःख की अनुभूति भी होती है और हम इसी के कारण अनेक प्रकार के निश्चय करते तथा अनेक पदार्थों की प्राप्ती के लिए चेष्टा करते है

→ चेतना के तीन स्तर माने गये हैं।
चेतन - वे बाते जिनके द्वारा मे सोचते, समझते और कार्य करते है
अवचेतन - इसमे वे बाते आती है जिनका तत्क्षण ज्ञान हमें नहीं होता है
अचेतन - परन्तु समय पर याद की जाती है
इसमे वे बाते आती है जिन्हे हम भूल चुके है
और हमे याद नही आती है

स्व- सन्तोष :-

* → वास्तविकता यह है कि वर्तमान युग सन्तोष का युग नहीं है आज जो सन्तुष्ट है वह या तो पिछड़ा हुआ है अथवा अप्रासंगिक कहलाता है

→ नज़ार को कुछ न चाहिए सोई शहनशाह, कहना - सुनना आसान है लेकिन घर का बच्चा यदि कह दे कि मुझे कुछ चाहिए ही नहीं स्कूल जाना बंद, तो माता-पिता की आध्यात्मिक पकड़ चाहे जितनी भी गहरी क्यो न हो, इसे स्वीकार नहीं कर पाएगे क्योकि बच्चे का भला - बुरा तो उन्ही को सोचना है

→ सन्तोष एक मानसिक अवस्था है इसे किसी से खरीदा, देना अथवा उधार नही लिया जा सकता है

→ यह उत्तराधिकार में प्राप्त अवस्था भी नही है यह सबकी अपनी-२ अवस्था है पिता की अपनी है, सन्तान की अपनी।

→ संन्तोष मुक्ति की अनिवार्य शर्त है यदि असन्तुष्टि अथवा कोई चाहत शेष रह गयी तो पुनः जन्म लेना होगा, जो कि भटकने की नयी यात्रा की शुरुआत है

→ सन्तोष अकर्मन्यता का नाम नहीं है बल्कि निष्काम कर्म के परिणामस्वरूप जो फल प्राप्त हो रहा है, उसे खुशी-2 स्वीकार करने का नाम है।

*. **निर्णयन :-**

→ निर्णयन (डिसिजन मेकिंग) का शाब्दिक अर्थ अन्तिम परिणाम तक पहुंचने से लगाया जाता है जबकि व्यावहारिक दृष्टिकोण से इसका आशय निष्कर्ष पर पहुंचने से है

→ Dr. J.C. ग्लोवर के अनुसार, चुने हुए ~~विकल्प~~ विकल्पों में से किसी एक के सम्बन्ध में निर्णय करना ही निर्णयन कहलाता है

*. **निर्णयन के लक्षण :-**

→ यह विभिन्न विकल्पों में से किसी एक का चयन करने की प्रक्रिया है

→ उपलब्ध विकल्पों में से सर्वोत्तम विकल्प के चयन की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है किसी भी बाहरी तत्व का हस्तक्षेप इनके चयन में नहीं होता है

→ यह मूल रूप से एक मानवीय प्रक्रिया है

→ यह एक बौद्धिक कार्य है

→ इसमें उन सभी कार्यों को सम्मिलित किया जाता है जो किसी विकल्प का अन्तिम रूप होता है

→ यह वह केन्द्र बिन्दु है जहाँ पर योजनाओं, नीतियों तथा उद्देश्यों का सही चयन किया जाता है

→ यह प्रशासक की एक सार्वभौमिक पहचान है

→ यह विवादों के समाधान की प्रक्रिया के रूप में कार्य करता है

→ निर्णय नकारात्मक भी हो सकता है या निर्णय न करना भी एक निर्णय हो सकता है

→ निर्णयों में उद्देश्यों का समावेश रहता है क्योंकि उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए ही निर्णय लिए जाते हैं

→ हर्बर्ट साइमन ने निर्णय प्रक्रिया के तीन स्तर बतलाये हैं
प्रथम स्तर को वह 'अन्वेषण क्रिया' मानते हैं जो कि यह
(1) बतलाती है कि कब और कहां पर निर्णय लेना जरूरी है
दूसरी स्तर को उन्होंने 'डिजाइन क्रिया' के नाम से सम्बोधित
(2) किया है जिसमें वैकल्पिक विधियों की खोज और उनका विकास
किया जाता है
तीसरे स्तर को उन्होंने 'चयन क्रिया' का नाम दिया है जिसमें
(3) उपलब्ध विकल्पों में से सही विकल्प का चुनाव किया जाता है

न्यूमैन, समर और वारेन ने निर्णय प्रक्रिया के निम्न 5 चरण बताये।
→ बैंके ने निर्णय प्रकिया के निम्न 11 चरण बताये थे
→

→ एक निर्णय प्रकिया में निम्नलिखित चरण हो सकते हैं

उद्देश्यों का निर्धारण करना
समस्या की व्याख्या करना
समस्या का विश्लेषण करना
वैकल्पिक समाधानों का विकास करना
विकल्पों की छंटनी करना
निर्णयों का क्रियान्वयन करना
प्रतिपुष्टि का नियन्त्रण करना।

*. **अभिप्रेरणा :-**

→ अभिप्रेरणा लक्ष्य-आधारित व्यवहार का उत्प्रेरण या उत्प्रेरण है अभिप्रेरणा या प्रेरणा आंतरिक या बाह्य हो सकती है इस शब्द का इस्तेमाल आमतौर पर इंसानों के लिए किया जाता है

* **अभिप्रेरणा की प्रविधियाँ या अवधारणाएँ :-**

① आंतरिक प्रेरणा।
② बाह्य प्रेरणा।

→ आंतरिक प्रेरणा अपने आप में किसी कार्य या गतिविधि में ही अंतर्निहित पुरस्कार किसी पहेली का आनंद लेने या खेल से लगाव से आती है 1970 के दशक से प्रेरणा के इस स्वरूप का अध्ययन सामाजिक और शैक्षणिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया जा रहा है उदा० भूख, प्यास, मल, मूत्र, क्रोध, प्रेम etc.

→ बाह्य अभिप्रेरणा साधक के बाहर से आती है रुपया-पैसा सबसे स्पष्ट उदाहरण है लेकिन दबाव और सजा का खतरा भी आम बाह्य प्रेरणा है, खेल में, खिलाड़ी के प्रदर्शन पर भीड़ तालियां बजाती है जो उसे बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित कर सकती है

*. **एल्डरफर का ERG सिद्धांत :-** मुख्यलेख - clayton Alderfer.

क्लेटन एल्डरफर ने मेस्लोव के जरूरतों के पदानुक्रम का विस्तार कर ERG सिद्धांत को स्थापित किया। शारीरिक और सुरक्षा सम्बन्धी जरूरतों जो निचले क्रम की जरूरतें हैं, को अस्तित्व की श्रेणी में रखा जाता है जबकि प्रेम और आत्मसम्मान सम्बन्धी जरूरतों को संबद्धता की श्रेणी में रखा जाता है विकास श्रेणी में हमारे आत्म-प्रत्यक्षीकरण और आत्मसम्मान सम्बन्धित जरूरतें निहित हैं

* सहज प्रेरणा - कटौती (ड्राइव - रिडक्शन) सिद्धांत :-

→ कई तरह के सहज प्रेरणा सिद्धांत होते हैं सहज प्रेरणा-कटौती सिद्धांत इस अवधारणा से पनपा है कि हमारी कुछ खास जैविक सहज प्रेरणा होती है जैसे कि भूख, अगर इसे सन्तुष्ट नहीं किया जाता, समय के गुजरने के साथ सहज प्रेरकशक्ति में वृद्धि होती जाती है प्रेरकशक्ति सन्तुष्ट हो जाती है तो उसकी ताकत कम हो जाती है यह सिद्धांत विचारों की प्रतिक्रिया नियंत्रण प्रणाली जैसे ऊष्मास्थैतिक (थर्मोस्टेट) के फ्रायड के सिद्धांत के विविध विचारों पर आधारित है

→ प्रेरकशक्ति के कुछ सहज ज्ञान युक्त या लोक वैधता सिद्धांत हैं उदाहरण के लिए जब भोजन पकाया जा रहा है तो भोजन तैयार हो जाने तक भूख के बढ़ने के साथ ताल मिलाकर सहज प्रेरकशक्ति प्रतिमान भी उपस्थित होता है और खाना खा लेने के बाद मनोगत भूख में कमी आ जाती है कई तरह की समस्याएँ हैं तथापि, जो सहज प्रेरणा कटौती की वैधता को खुली बहस के लिए छोड़ देती है पहली समस्या यह है कि यह इसकी व्याख्या नहीं करता कि गौण संबलित कारक सहज प्रेरणा को कैसे कम करते हैं उदाहरण के लिए पैसों से जैविक या मनोविज्ञानिक जरूरत पूरी नहीं होती है लेकिन तनख्वाह दूसरे क्रम की स्थिति के जरिए प्रेरकशक्ति को कम कर देती है दूसरे, एक सहज प्रेरणा जैसे कि भूख, को खाना खाने की एक इच्छा के रूप में देखा जाता है जो सहज प्रेरणा को एक होमुनकुलर स्वभाव बनाता है एक ऐसा लक्षण जिसकी आलोचना छोटे आदमी की बुनियादी समस्या और उसकी इच्छाओं को सहज ही हवाई बताकर की जाती है

→ इसके अलावा यह साफ है कि सहज प्रेरणा कटौती सिद्धांत पूरी तरह से आचरण का सिद्धांत नहीं हो सकता या एक भूखा इन्सान खाना पकाना पूरा करने से पहले खाए बगैर भोजन पका नहीं सकता। सभी प्रकार के व्यवहार से निपटने में सहज प्रेरणा सिद्धांत की सक्षमता, सहज प्रेरणा को सन्तुष्ट नहीं करने से या स्वादिष्ट भोजन के लिए अतिरिक्त प्रेरकशक्ति लगाकर जो भोजन के लिए सहज प्रेरकशक्तियों से मिलकर खाना पकाने और स्वाद के बारे में बताती है

* **मेस्लो / मेस्लोव सिद्धांत:-**

→ मेस्लोव के जरूरतों के पदानुक्रम के निचले स्तर पर पैसे कि शारीरिक जरूरतें, पैसा एक प्रेरक है ~~क्योंकि~~ हालांकि इसका प्रेरक प्रभाव कर्मचारियों पर केवल एक छोटी अवधि के लिए रह पाता है (हर्जबर्ग के अभिप्रेरणा के द्वि-कारक मॉडल के अनुरूप), अब्राहम मस्लोव के अभिप्रेरणा के सिद्धांत और डगलस मक्ग्रेगोर के x सिद्धांत और y सिद्धांत दोनों का ही कहना है कि उच्च स्तर के पदों में पैसे की अपेक्षा प्रशंसा, सम्मान, पहचान सत्ताधिकार और कुछ होने की भावना कहीं अधिक शक्तिशाली अभिप्रेरणा होती है

→ मस्लोव के पदानुक्रम के निम्नतर स्तर पर पैसे को रखा और अन्य जरूरतों को कर्मचारियों के लिए बेहतर अभिप्रेरक बताया मक्ग्रेगोर ने अपनी x सिद्धांत श्रेणी में पैसे को रखा और महसूस किया कि यह एक कमजोर अभिप्रेरक है प्रशंसा और मान्यता को y सिद्धांत में रखा और पैसे से मजबूत अभिप्रेरक माना।

→ अभिप्रेरित कर्मचारी हमेशा किसी काम को बेहतर तरीके से करने उपाय करते रहते हैं

→ अभिप्रेरित कर्मचारी अधिक गुणवत्ता उन्मुख होते हैं

→ अभिप्रेरित श्रमिक अधिक उत्पादनशील होते हैं

→ औसत कार्यस्थल गम्भीर जोखिम और श्रेष्ठ अवसर के चरम के लगभग बीच में होते हैं धुड़की से अभिप्रेरणा एक अंधगली जैसी रणनीति है और स्वाभाविक रूप से कर्मचारी इस धुड़की पक्ष के बजाय अभिप्रेरणा घुमाव के अवसर पक्ष की ओर कहीं अधिक आकर्षित होते हैं काम के माहौल में अभिप्रेरणा एक शक्तिशाली उपकरण है जो कर्मचारियों को उत्पादन के उनके सबसे कुशल स्तर पर काम करने की ओर ले चलता है

→ फिर भी स्टेनमेर्ज ने अधीनस्थों के तीन चरित्र प्रकार की भी चर्चा की प्रबल, उदासीन और उभयवृत्ति, जो सभी अनूठे ढंग से प्रतिक्रिया और परस्पर क्रिया करते हैं

* **संवेदना :-**

→ संवेदना अहसास या अनुभव की वह क्षमता है जो मनुष्य को विषयवस्तु का बोध करती है इस प्रकार संवेदना ज्ञान का स्रोत है यह संवेदना मात्र मनुष्य की ही विशेषता नही है जीवन मे सृष्टि मे जहां भी जीवन्तता है हलचल है गतिशीलता है संवेदना किसी अंशो मे अवश्य विद्यमान है संवेदना की स्थूलता या सूक्ष्मता के अनुरूप ही अनुभव की मंदता एवं तीव्रता का अनुभव होता है अत: उसी अनुपात मे बोध की या ज्ञान की मात्रा का स्वरूप बनता है

→ वास्तम मे सृष्टि की उत्पत्ति की स्रष्टा की सृष्टि संवेदना से हुई है एक अव्यय, निर्विकार, अजर-अमर परमात्मा की एक से अधिक हो जाने की इच्छा हुई है

→ मानवीय संवेदना के परिष्कार एवं विस्तार के साथ अतीन्द्रिय संवेदना का विकास होता था बिना आंखो के देखना, बिना कान के सुनना, बिना इन्द्रियों के स्पर्श लेना इसकी विशेषताएँ है दूरदर्शन, दूरश्रवण, पूर्वाभास, टेलीपैथी जैसे शक्तियो का सहज रूप से विकास होता है

→ मानवीय संवेदना के विकास का चरम है आध्यात्मिक संवेदना। इसमें जहां संवेदना के उपरोक्त वर्णित स्वरूप स्वत: ही समा जाते है वही इसमें अनुभव की समग्रता के कारण संवेदना की पूर्णता कुक्षल के रूप मे प्रकट होती है कुक्षल को प्राप्त ऐसा व्यक्तित्व करुणा, प्रेम एवं शान्ति से ओतप्रोत होता है

→ संवेदना के विकास के विविध मानदण्ड विगत शताब्दी मे निर्धारित हुये। बौद्धिक एवं वैज्ञानिक प्रगति के एकांकी युग मे IQ को प्रधानता मिली। किन्तु, कोरे बुद्धिवाद ने जहां मनुष्य को भौतिक रूप से समृद्ध बनाया, वही उसको भावनाशून्य मशीनी यंत्र मे तब्दील कर दिया।

*. सफलता :-

→ सफलता का अर्थ किसी उद्देश्य को पूरा करना या लक्ष्य तक पहुचना है

→ सफलता पाने के लिए आदमी को बड़ी सोच रखनी पड़ती है तभी ही सफलता मिलती है और सफलता के लिए आदमी का एक लक्ष्य व उद्देश्य निश्चित होना चाहिए तभी उस लक्ष्य में आदमी अपनी पूरी मेहनत करके सफल हो सकता है

→ अगर आप जिंदगी में एक सफल इन्सान ~~बनना~~ बनना चाहते हो तो आपको लगातार मेहनत करनी होगी

→ जीवन में सफलता कौन नही चाहता। हर व्यक्ति अपने जीवन में सफलता की ऊंचाई चढ़ना चाहता है यह संसार भी ऐसे ही लोगों को याद रखता है जो इस दुनिया में सफल हुए हैं जिन्होंने अपने-2 क्षेत्रों में विजय पताका फहराई है इस प्रतिस्पर्धा वाले युग में जीत से अधिक कीमती वस्तु शायद ही कोई होगी

→ एक बात तो पूरी तरह स्पष्ट है, संसार में हर व्यक्ति को जीतने की इच्छा होती है लेकिन जीतना इतना आसान नही है जीतने के लिए कीमत चुकानी पड़ती है वह कीमत होती है अपने जीवन का एक लम्बा समय ~~उसे~~ और लम्बे समय में किया हुआ कठिन परिश्रम।

→ एक चीज को लक्ष्य बनाकर उस दिशा में ~~कुछ~~ प्रयत्न करना होता है नियमित रूप से लगातार परिश्रम करना पड़ता है हमारा मन भटकने के लिए बहुत सारी चीजें सामने आएंगी पर इन पर ध्यान न देते हुये पूरी एकाग्रता से से किया हुआ परिश्रम ही मनुष्य को सफलता दिला सकता है

* **निः स्वार्थ सेवा :-**

→ वह सेवा जिसमे सेवक की स्वार्थ इच्छा नही होती है निः स्वार्थ होती है उसे निः स्वार्थ सेवा कहते है

→ सेवा पूरी तरह निःस्वार्थ और बदले मे कुछ भी इच्छा किए बिना होनी चाहिए जिन लोगो को ऐसी निस्वार्थ सेवा प्राप्त होती है वे सेवा करने वालो मे ईश्वर को देखते है और जो सेवा करते है वे सोचते है कि सेवा का अवसर प्राप्त होने से उनको भगवान दर्शन हो गए, और प्रभु उनके सामने है

→ दुनिया मे ऐसे भी लोग है जो अपना पूरा जीवन सेवा मे लगा देते है और बदले मे कुछ पाने की इच्छा किए बिना दुनिया से चले जाते है ऐसे लोगो और उनकी सेवा को बढावा देने की आवश्यकता है

→ सेवा के बाद गर्व का भाव भी नही रहना चाहिए क्योकि सेवा का अवसर तो जरूरतमंद द्वारा ही प्रदान किया गया है हमे समाज मे एक-दूसरे के प्रति ऐसे ही भाव की आवश्यकता है जब ऐसा चरित्र समाज का अंग बन जाता है तो ऐसे समाज मे कोई कमी नही निकाल सकता है

→ आदमी को दूसरो के हित की चिन्ता करने पर अपना हित स्वयं ही सिद्ध हो जाता है ईश्वर का न्याय है इस हाथ दो और उस हाथ लो

* नीति सम्मत व्यक्ति का वैयक्तिक अध्ययन :-

विधि :-

→ वैयक्तिक अध्ययन का अर्थ कई बार किसी व्यक्ति के निजी जीवन के अध्ययन से लगाया जाता है जो कि उचित नहीं है वह किसी भी सामाजिक इकाई, चाहे वह व्यक्ति हो या परिवार समिति, संस्था, समूह आदि का विस्तृत एवं गहन अध्ययन है इस प्रविधि का प्रयोग मनोचिकित्सा समाज कार्य तथा अनुसंधान में किसी समस्या या इकाई के बारे में सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्ती के लिए किया जाता है

परिभाषा :-

→ वैयक्तिक अध्ययन गुणात्मक विश्लेषण का एक विशेष रूप है ~~सामाजिक इकाई से सम्बन्धित~~ जिसके अन्तर्गत किसी व्यक्ति, परिस्थिति अथवा संस्था का अत्यधिक सावधानीपूर्वक और पूर्ण अवलोकन किया जाता है

प्रकार : There are two type

1. व्यक्ति का वैयक्तिक अध्ययन
2. समूह अथवा समुदाय का वैयक्तिक अध्ययन

प्रक्रिया :-

→ इसको हम निम्नलिखित तरीकों द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं

1. समस्या के पक्षों का निर्धारण :-

→ वैयक्तिक अध्ययन के लिए सर्वप्रथम अध्ययन की इकाई अथवा समस्या की प्रकृति का समुचित स्पष्टीकरण करना, इकाईयों का निर्धारण करना तथा अध्ययन क्षेत्र से पूर्णत: अवगत होना आवश्यक है इस स्तर पर अध्ययनकर्ता को समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित निम्नांकित तथ्यों पर ~~ध्यान~~ ध्यान देना आवश्यक है

→ समस्या का चुनाव
→ इकाईयों का निर्धारण

→ इकाईयों की संख्या का निर्धारण
→ अध्ययन के क्षेत्र का निर्धारण
→ विश्लेषण का क्षेत्र

(2) घटनाओं का कालक्रम :- → समस्या की विवेचना के बाद विभिन्न घटनाओं के क्रम को ज्ञात किया जाता है यह भी ज्ञात किया जाता है कि इस दौरान क्या-२ परिवर्तन घटित हुए घटनाओं के उतार-चढाव द्वारा भविष्य मे होने वाले परिवर्तनों को समझा जाता है

(3) निर्धारक कारक ज्ञात :- वैयक्तिक अध्ययन मे उन कारकों का भी ~~[illegible]~~ अध्ययन किया जाता है जैसे किसी घटना के घटित होने के उत्तरदायी होते हैं
→ प्रमुख कारक - किसी घटना के घटित होने के लिए मूल उत्तरदायी होते हैं
→ सहायक कारक - ये कारक प्रमुख कारकों की सहायता करते हैं

(4) विश्लेषण एवं निष्कर्ष :- यह वैयक्तिक अध्ययन का अंतिम चरण है जिसके अन्तर्गत सभी संकलित तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण करके निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है

* वैयक्तिक अध्ययन की विशेषताएं :- → अध्ययन की विशेष इकाई का अध्ययन
→ गुणात्मक अध्ययन → गहन अध्ययन → कारकों का अध्ययन
→ अनेक स्रोतों का तथा प्रविधियों का प्रयोग

* अध्ययन की सीमाएं या दोष :- → अत्यधिक सीमित अध्ययन
→ दोष पूर्ण पुलेखों पर निर्भरता → पक्षपात की समस्या
→ प्रतिचयन (निदर्शन) का अभाव → अत्यधिक व्ययपूर्ण पद्धति
→ परीक्षण सम्बन्धी कठिनाइयाँ

*. **वैयक्तिक अध्ययन में तथ्य संकलन की प्रविधियां :-** → वैयक्तिक अध्ययन प्रविधि अन्य विधियों की भाँति मात्र आंकड़े संकलन का एक उपकरण या साधन बल्कि यह एक ऐसा तरिका है जिसमें इकाई का गहन अध्ययन किया जा सके प्राथमिक व द्वितीयक दोनो प्रकार के आंकड़े उपलब्ध करने पड़ते है ताकि इकाई के व्यवहार को ठीक से समझा जा सके।

(1) प्राथमिक सूचनाएँ संकलन की प्रविधिया :- → प्राथमिक सूचनाएँ संकलन करने के मुख्य स्रोत तथा उपकरण व प्रविधियाँ निम्न है

1. साक्षात्कार
2. अनुसूची
3. निरीक्षण

(2) द्वितीयक सूचनाएँ संकलन की प्रविधियाँ :- → द्वितीयक सूचनाएँ संकलन करने की सबसे प्रमुख प्रविधियां तथा उपकरण निम्नलिखित है

1. डायरियाँ तथा निजी पत्र
2. जीवन इतिहास

*. **वैयक्तिक अध्ययन का महत्व :-** → सामाजिक घटनाओं एवं समस्याओं के अत्यधिक सूक्ष्म और गहन अध्ययन में वैयक्तिक अध्ययन अधिक व्यावहारिक एवं उपयोगी सिद्ध हुआ है मनोचिकित्सक का मत है अधिकांश बीमारियां मन जनित होती है अतः उनका वैयक्तिक अध्ययन के द्वारा इलाज किया जा सकता है
कूले ने इस पद्धति को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि वैयक्तिक अध्ययन हमारे बोध ज्ञान को विकसित करती है और जीवन के बारे में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है कूले के इस कथन के सन्दर्भ में वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के प्रमुख गुणों द्वारा उपयोगिता को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है

→ इकाई का गहन अध्ययन
→ वैध प्राक्कल्पनाओं का निर्माण
→ अध्ययन प्रपत्रों के निर्माण में सहायक
→ वर्गीकृत प्रतिचयन में सहायक
→ विरोधी इकाईयों का ज्ञान
→ अनुसंधानकर्ता के ज्ञान का विस्तार
→ मनोवृत्तियों के अध्ययन में सहायक
→ दीर्घ प्रक्रियाओं का ज्ञान
→ प्रारम्भिक अध्ययन में सहायक
→ मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में सहायक

* वैयक्तिक अध्ययन की उपयोगिता या गुण :-

→ गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन
→ इकाई से सम्बन्धित पूर्ण ज्ञान
→ विभिन्न प्रविधियों का ज्ञान
→ प्रारम्भिक अन्वेषण में उपयोगी
→ उपकल्पनाओं का निर्माण
→ व्यक्तिगत अनुभव में वृद्धि
→ दीर्घकालीन घटनाओं एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन
→ विकास सम्बन्धी अध्ययनों में सहायक
→ व्यक्तियों का अध्ययन
→ वर्गीकरण एवं तुलना

* वैयक्तिक पद्धति (अध्ययन) तथा सांख्यिकी पद्धति :-

→ वैयक्तिक अध्ययन पद्धति सामान्यतः गुणात्मक अध्ययनों तथा सांख्यिकी पद्धति परिमाणात्मक (गणनात्मक) पद्धतियों में अधिक उपयोगी है फिर भी दोनों परस्पर सम्बन्धित हैं तथा पूरक हैं संक्षेपतः वैयक्तिक अध्ययन पद्धति तथा सांख्यिकी पद्धति में निम्नलिखित अन्तर हैं

अन्तर का बिन्दु	वैयक्तिक अध्ययन	सांख्यिकी अध्ययन
→ अध्ययन की प्रकृति	गुणात्मक/वर्णनात्मक	परिमाणात्मक/विवेचनात्मक
→ अध्ययन का क्षेत्र	सीमित	विस्तृत
→ इकाईयो की संख्या	सीमित	समग्र या विशाल समूह
→ इकाईयो का चयन	बिना प्रतिचयन के सीमित एवं दोषपूर्ण सामान्यीकरण	सामान्यीकरण संभव
→ निश्चितता एवं परिशुद्धता	कम निश्चितता, कम परिशुद्धता, कम विश्वसनीयता, कम स्पष्टता	अधिक निश्चितता, अधिक परिशुद्धता, अधिक " "

→ उपर्युक्त मे अन्तर बिन्दु की स्पष्टता समस्त एक वस्तुनिष्ठ शोध को प्रदर्शित करता है वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के संयुक्तता से एक प्रभावशाली शोध की सफलता को बढ़ा देता है

* अनासक्ति	* आसक्ति
→ मनोविज्ञान मे भावनात्मक प्रबन्धन कन्ट्रोल करने मे असमर्थता या मानसिक दृढ़ता को संदर्भित करता है	→ अनुलग्नक सिद्धांत, मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरो और सामाजिक कार्यकर्ताओ द्वारा मनोवैज्ञानिक सिद्धांत का उपयोग व्यक्तियो के बीच अनुमानित भावनात्मक सम्बन्ध का वर्णन और जांच करने के लिया जाता है
→ डिटेचमेंट एक सैन्य इकाई है जिसमे अपनी मूल इकाई को पूरी तरह से छोड़ दिया जाता है	
→ डिटेचमेंट गलती, बड़े विस्थापन से जुड़े भूवैज्ञानिक शब्द है	→ इसमे मूल इकाई को नही छोड़ा जाता है
	→ इसमे विस्थापन नही होता है
→ अनासक्त होकर कर्म करे	
→ सदैव अनासक्ति से मुक्त रहो	→ आसक्ति होकर कर्म न करे
→ अनासक्ति को छोडो	→ सदैव आसक्ति से जुड़े रहे
	→ आसक्ति को मत छोडो

* सकारात्मक आत्मा, शरीर, मस्तिष्क और आत्मा :- → गीता मे कहा गया है "मुझमे प्राणो को अर्पित करो" इसका क्या अर्थ है प्राण केवल साँस नही, बल्कि एक जीवन शक्ति है जिसके बिना जीवन हो ही नही सकता यह प्राण हमारे पूरे शरीर मे फैलकर पूरे शरीर, इन्द्रियो, मन, बुद्धि और अहंकार को गति दे रहा है जब प्राण इंद्रियो के साथ गति करता है तो इन्द्रियो विषयो की ओर जाती है लेकिन यदि यह प्राण इन्द्रियो से सही प्रकार से नही बहे तो आँख देख नही सकती है, कान सुन नही सकते तथा जुबान बोल नही सकती है इसी प्रकार सब चल रहा है जब सब कुछ प्राण से ही चल रहा है तो प्राणो को ही यदि भगवान मे अर्पित कर दिया जाए तो प्राण से चलने वाला शरीर, इन्द्रियां, मन, और बुद्धि भगवान को ही समर्पित हो जाएगे हर साँस मे केवल भगवान की याद रहेगी जैसे किसी कम्पनी के बिकने पर उसमे आने वाली सभी चीजे खरीदने वाले के अधिकार मे आ जाती है

→ तन्मात्राओ की शक्ति प्राण ही है और इसी प्राण शक्ति द्वारा तन्मात्राओ से पांच महाभूत बने है पांचो महाभूत, कार्य की दृष्टि से अलग-2 होता है लेकिन आधार रूप मे ब्रह्मांड मे फैला प्राण एक ही होता है जैसे बिजली एक होती है लेकिन फ्रीज ठण्डे होने का काम करता है और हीटर गर्म।

→ पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पांचो तत्वो से मिलकर प्राण / आदमी बना होता है

→ प्राण तो एक ही है लेकिन कार्य की दृष्टि से इसके पांच भेद है पहली प्राण वायु है तो नासिका से हृदय तक रहती है दूसरी समान वायु है जो हृदय से नाभि तक स्थित है

और तीसरी अपान वायु है जो नाभि से पैर तक स्थित है चौथी उडान वायु है जो गर्दन से सिर तक रहती है तथा पाँचवी व्यान वायु है जिसका स्थान सम्पूर्ण शरीर मे फैला हुआ है

शरीर :- शरीर इंसान का भौतिक पहलू है इसमे लगभग 50 ट्रिलियन कोशिकाये होती है जो ऊतक, नसो, हड्डियों और अंगो को बनाने के लिए व्यवस्थित होती है शरीर खुद को पदार्थ, परमाणुओ, कणो और अणुओ की भाषा मे अभिव्यक्त करता है

मन :- मन इन्सान का मानसिक / भावनात्मक पहलू है मन विचारो और विचारो के साथ ही भावनाओ और भावनाओ को संसाधित करता है मन चेतना, स्मृति और कल्पना है

आत्मा :- आत्मा सभी जीवो के भीतर महत्वपूर्ण शक्ति है आत्मा भगवान या निर्माता कहा जा सकता है इसे क्वांटम फील्ड, फील्ड या अपबंधित भी कहा जा सकता है यह ब्रह्मांड का अविकसित आयोजन सिद्धांत है और इसकी भाषा शुद्ध ऊर्जा है आत्मा इन्सान का एक गैर भौतिक पहलू है

possitive spirit :- The optimistic attitude that comes from knowing that good work all things for the good of those who love Him.

एकीकरण :-
मन, शरीर, आत्मा और आत्मा घटक है कि सामूहिक रूप से शामिल है और हमारे प्रजातियों को परिभाषित कर रहे है अगर हम बीमार है या पीड़ित है तो हमे पूरी तरह से ठीक होने के लिए समग्रतासे काम करना चाहिए

* **आध्यात्मिक भागफल का परीक्षण :-** → वे सारी बातें जिन्हें आप सोचते और महसूस करते हैं तथा स्वयं के बीच जब एक दूरी बनाने लगते हैं तो इसे ही हम चेतना कहते हैं

→ जिसे हम साधना कह रहे हैं वह एक अवसर है अपनी ऊर्जा को बढ़ाने ताकि आप अपनी सीमाओं और सभी खामियों पर नियंत्रण रख सके जिनके कारण आप अपने विचारों और भावनाओं में उलझ गये हैं

→ आपके अन्दर यही मानसिकता घर कर गई है कि जहां भी जाओ वहां उतना संग्रह कर लो जितना कर सकते हैं तो बस यह स्वीकृति देनी है ताकि यह स्वतः घटित हो सके।

→ हम जिस प्रकार सोच और महसूस कर रहे हैं उससे केवल निरन्तर बंधन का जाल निर्मित किया जा रहे हैं

→ मन की प्रकृति हमेशा संग्रह करने की होती है जब यह स्थूल रूप में होता है तो चीजों का संग्रह करना चाहता है जब यह थोड़ा सा विकसित होता है तो ज्ञान का संग्रह करना चाहता है जब इसमें प्रबल भावना होती है तो यह लोगों का संग्रह करना चाहता है इसकी मूल प्रकृति बस यही है कि यह संग्रह करना चाहता है मन एक संग्रहकर्ता है हमेशा कुछ न कुछ एकत्रित करना बटोरना चाहता है जब कोई व्यक्ति यह सोचने और विश्वास करने लगता है कि वह आध्यात्मिक मार्ग पर है तो उसका मन तथाकथित आध्यात्मिक ज्ञान संग्रह करने लगता है

→ अगर आप कृपा का अनुभव नहीं करते, खुद को कृपा ग्रहण करने योग्य नहीं बनाते, कृपा को धारण करने के लिए खुद को विनम्र करते तो समझ लीजिए कि आपको कई जन्मों तक आध्यात्मिक पथ पर चलना पड़ेगा।

→ परीक्षा हमारे ज्ञान का परीक्षण करने का तरीका है

उद्देश्य	लक्ष्य
→ इसमें प्रयासों को निर्देशित करते है	→ इसमें प्रयासों को हासिल करते है
→ यह अल्पकालीन होता है	→ यह दीर्घकालीन होता है
→ यह लक्ष्य की अभिव्यक्ति है	→ यह लक्ष्य के दिशानिर्देश है
→ यह अधिक विशिष्ट होता है	→ यह कम विशिष्ट होती है
→ इसकी निश्चित सीमा अवधी होती है	→ इसकी निश्चित सीमा अवधी नहीं होती है
→ ये मापने योग्य होते है	→ ये मापने योग्य नहीं होते है

मूल्यांकन	परीक्षण
→ मूल्यांकन किसी विकसित कार्यक्रम की पहले और बाद की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन है	→ परीक्षण किसी विकसित कार्यक्रम के बाद का तुलनात्मक अध्ययन है
→ कार्यक्रम की सीमा निर्धारित करता है	→ इसमें ऐसा नहीं होता है
→ यह कार्यक्रम की लागत का पता लगाता है	→ यह कार्यक्रमों के परिणामों का पता लगाता है
→ यह पहले से निर्धारित समय के अन्तर्गत होते है	→ यह पहले से निर्धारित समय के अन्तर्गत नहीं होते है

- ✓ AgriGyan.in is a Platform Of B.sc(hons) Agri. PDF in Hindi, English Language and Other Agriculture Related Information So You can Visit On www.agrigyan.in and Download All B.sc Agriculture PDF in Hindi And English.

- ✓ Summit Your Notes On www.agrigyan.in With Other Agri. Student with Your Identification .

Connect with AgriGyan.in :- **sragrigyan@gmail.com**